

Written by नरिक्किर सहि  
Thursday, 14 June 2018 18:00

---

: 000000 00 0000 0000000000 0000 00 0000 00 00 000000 00000000 000000 : 0000  
0000 00 00000000 00 0000 00 00 000000 000000 00, 0000 00 0000 00 0000 00  
000000000 0000 000000 00000 : 0000000000 00 000000 00 00 0000 00000000 00000 0000 :

0000000000 00000

000000 : कआदमी के बचपन से ही वहम था क रात में उसके पलंग के नीचे कोई होता है। इसलिये कदनि वह मनोचकित्सक के पास गया और उसे बताया, 'मुझे कसमस्य है। जब भी मैं सोने के लिये बसिटर पर जाता हूँ तो मुझे लगने लगता है क कोई मेरे पलंग के नीचे छुपा हुआ है। मुझे बहुत डर लगता है। कभी-कभी ऐसा लगता है क मैं पागल हो जाऊँगा'

0000000000 00 000000 000000 00 000000 00 0000 00000000 00000 00 000000 000000 :-

[000000 000000000000](#)

'तुम साल भर के लिये अपने के मेरे हवाले कर दो', मनोचकित्सक बोला। 'हफ्ते में तीन बार मेरे पास आओ, मुझसे बात करो, मुझे लगता है मैं तुम्हें इस डर से छुटकरा दिला दूँगा।'

'आप इस इलाज क कतिना पैसा लेंगे, डॉक्टर सा'ब?'

'पाँच सौ पचास रुपये, हर बार क', डॉक्टर ने जवाब दिया।

'ठीक है, डॉक्टर सा'ब, मैं पलंग पर सोना चालू करता हूँ और यदि जरुरत पड़ी, तो आपके पास आता हूँ, ऐसा बोलकर वो चल दिया।

छः माह बाद, अचानक ही उसकी मुलाकत उस मनोचकित्सक से सड़क पर हो गई।

'तुम फिर आँ नहीं; लौटकर, अपने डर के इलाज के लिए ?' मनोचकित्सक ने पूछा

0000000000 00 000000 000000 00 0000000 000 000 00000000 0000, 00 000000 00000000 0000 00  
000000 00000000 :-

[00000000](#)

'हाँ..दरअसल हर बार क पाँच सौ रुपया...हफ्ते में तीन बार...वो भी साल भर तक! बहुत ही महँगा सौदा था; मेरे लिये, डॉक्टर सा'ब जबकि मेरे क "वकील " दोस्त ने डेढ़ सौ रुप में ही मेरा इलाज करवा दिया मनोचकित्सक को बताया

'सच? ऐसा है क्या?' कहते हुए फिर थो वयंग्यात्मक लहजे में मनोचकित्सक ने आगे पूछा, 'क्या मैं जान सकता हूँ कि कैसे तुम्हारे "वकील "दोस्त ने, डेढ़ सौ रुप में ही तुम्हारा इलाज करवा दिया?'

'हाँ, मेरे दोस्त ने मुझे अपने पलंग के चारों पायों को किसी बड़ई से कटवा लेने की सलाह दी थी अब मेरे पलंग के नीचे कोई नहीं रहता, डॉक्टर सा'ब'

00000000000000 00 000000 00 000000 00 0000 00000000 000000 0000 00 000000 00000000 :-

000000 00 00000000000000

मॉरल ऑफ द स्टोरी :

हर बीमारी के लिये डॉक्टरों के पास दौड़ने की जरूरत नहीं है।

"वकील " दोस्तों के पास भी चले जाया करें और उनसे बात कथिया करें। समस्याओं के हमेशा क से अधिक समाधान होते हैं।

0000000000-000 00 000000 000000 00 000000 00 000 000000 000000 00000 00 000000 000000 :-

